4

बातूनी

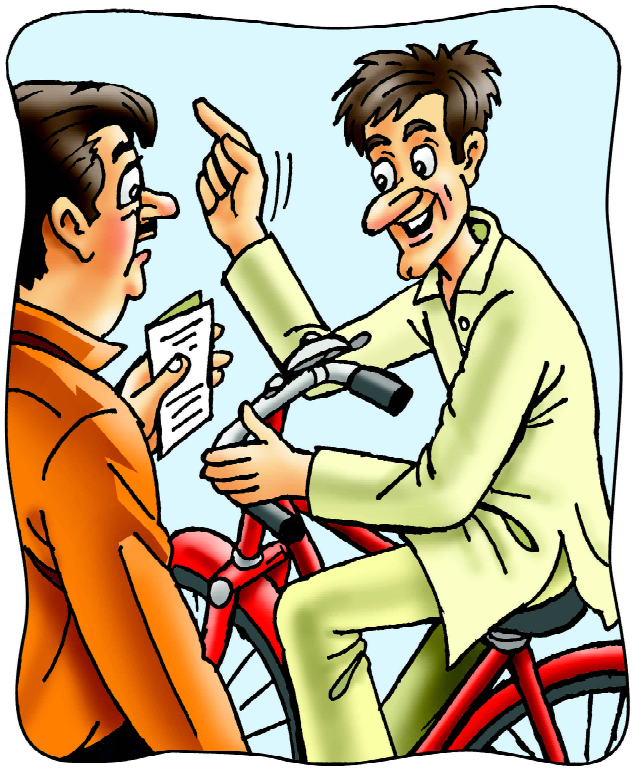

आदमी **सुभीता** खोजने में मारा जाता है। उस शाम अगर मैं खुद जाकर लिफ़ाफ़ा पोस्ट ऑफ़िस में छोड़ देता तो वह कष्ट न होता जो तभी से भुगत रहा हूँ।

उस शाम मुझे एक लिफ़ाफ़ा ज़रूरी छोड़ना था। मैं बाहर निकला। पोस्ट ऑफ़िस बंद होने का समय हो रहा था। सामने से एक **सज्जन** (बाद में इन्हें मैंने कभी 'सज्जन' नहीं कहा) साइकिल पर जाते दिखे। मैंने उन्हें रोककर कहा, "ज़रा एक लिफ़ाफ़ा लेकर इस काग़ज़ को उसमें रखकर यह पता लिखकर डाक में छोड़ दीजिए।"

उन्होंने कहा, "सहर्ष।" बस उनके सहर्ष ने मेरा हर्ष तभी से जो छीना है, वह तो आज तक वापस नहीं मिला।

दूसरे दिन वे दिख गए, तो मैंने पूछा, "वह चिट्ठी डाल दी थी?"

आप बताइए, इसका जवाब ज़्यादा-से-ज़्यादा कितना लंबा हो सकता है? यही कि—जी हाँ साहब, मैंने आपकी चिट्ठी टिकट लगाकर और पता लिखकर पोस्ट ऑफ़िस के लाल लेटर बॉक्स में छोड़ दी थी। बस। इससे ज़्यादा तो नहीं हो सकता।

पर उन्होंने यह जबाव दिया, "मैं पोस्ट ऑफ़िस पहुँचा साब। देखता हूँ कि पोस्ट ऑफ़िस बंद हो चुका है। अब मैं बड़ा परेशान। मैं कहूँ कि करूँ तो क्या करूँ। आपकी चिट्ठी ज़रूरी है। आपने पहली बार तो कोई काम बताया। इतने दिनों से आप यहाँ रहते हैं, पर सेवा का कोई मौका ही नहीं मिला था। मैंने कहा, चाहे आकाश टूट जाए और पृथ्वी फट पड़े, पर आपका लिफ़ाफ़ा ज़रूर डालूँगा। तो साब मैं बाहर निकला। अब मैं कहूँ कि जाऊँ तो कहाँ जाऊँ? इतने में साब, मेरी नज़र पड़ी साहनी मेडिकल स्टोर पर। वहाँ साहनी बैठा था। मैं वहाँ गया। साहनी मेरा कई साल से दोस्त है। आप नहीं जानते, उसके फ़ादर मेरे फ़ादर के बड़े अच्छे दोस्त थे। बाद में उसके फ़ादर को एक दिन दिल का दौरा पड़ा। ये सब आजकल दिल की बीमारी का भी बड़ा फैशन चल पड़ा है। तो मैंने कहा, "यार साहनी, लिफ़ाफ़ा

शब्दार्थः **सुभीता**–सुविधा सहूलियत; **सज्जन**–भला आदमी, शरीफ़

दे।'' उसने कहा, ''लिफ़ाफ़ा तो नहीं है, टिकट है।'' मैंने कहा, ''ला टिकट ही दे।'' मैंने साब टिकट तो हाथ में कर ली। अब लिफ़ाफ़ा? मैं बाहर खड़ा-खड़ा कहूँ कि लिफ़ाफ़ा कहाँ से लाऊँ। अब मुझे घबराहट होने लगी। आखिरी डाक निकालने का वक्त हो रहा था। लिफ़ाफ़ा नहीं गया तो क्या होगा? हे भगवान, तू ही रास्ता बना। मैं तो इस गाड़ी से लिफ़ाफ़ा छोड़कर ही रहूँगा। चाहे मुझे स्टेशन ही क्यों न जाना पड़े। गाड़ी चल दी होगी, तो उसे रोककर लिफ़ाफ़ा छोड़ूँगा। पर लिफ़ाफ़ा मिले कहाँ? अचानक साब मुझे राजू दिखा। वही राजू जो किताबों का एजेण्ट है। उसके हाथ में बस्ता था। मैंने सोचा, इसके पास ज़रूर लिफ़ाफ़ा होगा। मैंने कहा, ''यार राजू, एक लिफ़ाफ़ा दे।'' उसने कहा–''यार लिफ़ाफ़ा तो है पर उस पर फ़र्म का नाम छपा है।'' मैंने कहा, ''कोई बात नहीं। मैं उसे काट दूँगा।'' मैंने लिफ़ाफ़ा ले लिया।

जेब में हाथ लगाया तो कलम नहीं था। मैंने कहा, अजीब बेवकूफ़ हूँ। काम ले लिया और कलम लाया नहीं। भाग्य से राजू के पास पेन था। मैंने कहा, ''यार पेन दे।'' और उसने साब, फ़ौरन निकालकर दे दिया। राजू में इतनी बात अच्छी है। उसके पास कोई चीज़ हो, तो फ़ौरन दे देता है। अब मैं कहूँ कि काहे पर रखकर लिखूँ। मैंने झट उसका बस्ता लिया। उस पर लिफ़ाफ़ा रखा, उसकी फर्म का नाम काटा और पता लिखा और साब, मैं भागा, पोस्ट ऑफ़िस की तरफ़। अब संयोग देखिए साब, कि पहुँचा हूँ कि डाकिया चिट्ठियाँ निकालकर लेटर बाक्स बंद कर रहा था। मैंने कहा, ''भाई साब, यह चिट्ठी भी ज़रूरी है। इसे डाक में शामिल कर लीजिए।'' वह भला आदमी था। उसने लिफ़ाफ़ा ले लिया। तब साब, मेरा मन हल्का हुआ।''

यह मैंने बहुत **संक्षेप** में लिखा है। उन्होंने लगभग आधा घंटा इस **विवरण** में लिया।

मैंने कसम खाई कि कभी इनसे कोई काम नहीं कराऊँगा। मगर जितना पाप कर चुका था, उसका फल तो भुगतना ही था। मेरा काम करके उन्होंने मेरे ऊपर हमेशा के लिए अधिकार जमा लिया था। रास्ते में उनका घर पड़ता था। मैं निकलता और उन्हें दिख जाता, तो वे बहुत खुश होकर मुझसे पूछते, ''कहाँ जा रहे हैं?''

मैं नहीं समझ पाता कि आमतौर पर लोग क्यों पूछते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं। वे क्या पुलिस के आदमी हैं या खुफ़िया विभाग के हैं, या चाचा होते हैं कि जानना चाहते हैं कि तुम कहाँ जा रहे हो? यह असल में आदमी को रोककर बात करने की भूमिका है। जिसे जल्दी जाना है, वह भी होशियारी करता है। कहता है–कहीं नहीं। ऐसे ही। और आगे बढ़ जाता है। क्या सवाल है–कहाँ जा रहे हैं? और क्या जवाब है–कहीं नहीं। ऐसे ही। मगर लोग पूछते ही हैं और लोग जवाब भी देते हैं।

मैं जब रुक जाता और कहता यों ही ज़रा सिविल सर्जन से मिलने जा रहा हूँ। बस वे मुझे पकड़ लेते–अच्छा,

---

शब्दार्थः संक्षेप–थोड़े में कोई बात कहना; **विवरण**–वर्णन, व्याख्या

डॉ. गुप्ता से। वे हमारे चाचा के बड़े अच्छे दोस्त थे। नागपुर में पास-पास बँगला था। हमारे घर आते, तो मुझे गोद में लेकर खिलाते थे। मिलते हैं, तो कहते हैं—क्यों बेटा भूल गए? घर नहीं आते हो।

वे दस-पंद्रह मिनट तक डॉ. गुप्ता से अपने पारिवारिक संबंध बताते।

कभी मैं कहता—प्रोफेसर तिवारी से मिलने जा रहा हूँ।

वे कहते—अच्छा-अच्छा, तिवारी जी से मिलने। हमारे फ़ादर-इन-लॉ के वे बड़े पुराने दोस्त हैं। दोनों साथ पढ़ते थे। अभी भी वे हमारे प्रति प्रेम-भाव रखते हैं। कभी मिल जाते हैं, तो कहते हैं—कभी घर आओ।

मैं किसी का भी नाम लेता वह उनके चाचा, मामा, ससुर या पिता का दोस्त निकल आता और वे दस-पंद्रह मिनट उसके संबंधों के बारे में बताते। एक दिन कहूँगा—डाकू जालमसिंह से मिलने जा रहा हूँ। तब वे शायद झटके में कहेंगे—अच्छा, डाकू जालमसिंह। वे तो हमारे फ़ादर के अच्छे दोस्त थे। दोनों साथ ही डाका डाला करते थे। जालमसिंह ने तो मुझे गोद में खिलाया है। फिर एक दिन कहूँगा—भगवान से मिलने जा रहा हूँ।

वे कहेंगे—भगवान से। अच्छा-अच्छा। वे तो हमारे चाचा के बड़े अच्छे दोस्त हैं। दोनों स्वर्ग में साथ काम करते थे। मेरा नाम उन्हें बताइए। वे पहचान जाएँगे। मुझे तो भगवान ने गोद में खिलाया है।

अब अपनी यह हालत है कि उस रास्ते को छोड़कर करीब आधा मील का चक्कर लगाकर जाता हूँ। एक दिन वे बाज़ार में मिल गए। कहने लगे, ''आजकल आप दिखाई नहीं देते।'' मैंने कहा, ''बाहर निकलता ही नहीं। घर में ही रहता हूँ।''

उन्होंने कहा, ''अच्छा, तो फिर घर पर ही दर्शन करूँगा।''

मैं कहकर फँस गया। अगर वे घर पर दर्शन करने आ पहुँचे, तो घंटों बैठेंगे। सोच-विचार के बाद यह तय किया कि मैं फिर उनके घर के सामने से निकलना शुरू कर दूँ। वहीं दर्शन दे दूँ, ताकि वे घर पर दर्शन करने ना आ पहुँचें।

उन सज्जन से मुझे डर लगता है। वे मुझे दूर से देखते हैं, तो चेहरा खिल उठता है। मैं काँप जाता हूँ। वे घंटे-भर से कम में नहीं छोड़ते। उनके चेहरे पर वही भाव होता है, जो सुरसा के मुख पर हनुमान को देखकर आया था। सुरसा ने कहा था—आज सुरन मोहि दीन अहारा। आज देवताओं ने मुझे भोजन दिया। ये सज्जन भी किसी परिचित को देखकर मन-ही-मन कहते हैं—आज सुरन मोहि दीन अहारा। वे पास आकर हाथ पकड़ लेंगे और एक पाँव से आपका पाँव दबा लेंगे और मुँह मिलाकर घंटे-भर बकते जाएँगे। हम तो राह देख रहे हैं कि कोई कर्नल जिम कार्बेट पैदा होगा, जो उनसे हमारी रक्षा करेगा।

—हरिशंकर परसाई

अभ्यास

पाठ में से

1. लेखक ने सज्जन को क्या काम करने के लिए कहा और क्यों?
2. सज्जन ने राजू से लिफ़ाफ़ा क्यों माँगा?
3. लोग आमतौर पर दूसरों से यह प्रश्न क्यों पूछते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं?
4. लेखक ने घर से बाहर जाने का कौन-सा रास्ता लेने का फ़ैसला किया और क्यों?
5. **उचित उत्तर पर सही (Ö) का निशान लगाइए–**

   (क) साहनी मेडिकल स्टोर से लेखक ने क्या लिया?

   ☐ लिफ़ाफ़ा ☐ टिकट ☐ पेन ☐ काग़ज़

   (ख) सज्जन ने चिट्ठी लेटर बॉक्स में डालने का विवरण कितनी देर में दिया?

   ☐ एक घंटा ☐ पंद्रह मिनट ☐ आधा घंटा ☐ चालीस मिनट

   (ग) सज्जन के चाचा के बड़े अच्छे दोस्त कौन थे?

   ☐ तिवारी जी ☐ डॉ. गुप्ता ☐ राजू ☐ डाकिया

6. **पाठ में से सही शब्द छाँटकर रिक्त स्थान भरिए–**

   (क) वे दस-पंद्रह मिनट तक डॉ. गुप्ता से अपने ..... संबंध बताते।

   (ख) कभी मैं कहता–प्रोफेसर ..... से मिलने जा रहा हूँ।

   (ग) मुझे तो भगवान ने ..... में खिलाया है।

   (घ) एक दिन वे ..... में मिल गए।

   (ङ) अच्छा, तो फिर घर पर ही ..... करूँगा।

बातचीत के लिए

1. लेखक उस सज्जन से क्यों नहीं मिलना चाहता था?
2. अपना काम किसी और से करवाने का क्या-क्या परिणाम हो सकता है, विचार कीजिए।
3. कोई ऐसा किस्सा सुनाइए जब आपकी किसी से लंबी बातचीत हुई हो?

अनुमान और कल्पना

1. यदि आप लेखक की जगह होते तो सज्जन से किस प्रकार बातें करते?
2. मान लीजिए कि सज्जन लेखक का काम नहीं कर पाते तो कहानी में क्या बदलाव आता?

भाषा की बात

1. पाठ में से कोई दस संयुक्त अक्षरों को ढूँढकर उन्हें शब्द-कोश के क्रमानुसार लिखिए–

(1) ..... (2) ..... (3) ..... (4) .....

(5) ..... (6) ..... (7) ..... (8) .....

(9) ..... (10) .....

2. नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द पाठ में से ढूँढकर लिखिए–

(क) अंदर – ..... (ग) विस्तार – .....

(ख) पाताल – ..... (घ) पुण्य – .....

3. नीचे दिए गए शब्द समूहों में से विशेषण व विशेष्य शब्द अलग-अलग करके लिखिए–

	विशेषण	**विशेष्य**
(क) अच्छे दोस्त	.....	.....
(ख) आपकी चिट्ठी	.....	.....
(ग) हमारे चाचा	.....	.....
(घ) इतनी बात	.....	.....
(ङ) भला आदमी	.....	.....

जीवन मूल्य

- यह मैंने बहुत संक्षेप में लिखा है। उन्होंने लगभग आधा घंटा इस विवरण में लिया।
  1. ज़रूरत ये ज़्यादा बोलने के क्या परिणाम हो सकते हैं? बताइए।
  2. बातचीत या बोलना भी एक कला है–इस विषय पर अपने विचार बताइए।

कुछ करने के लिए

1. कहानी 'बातूनी' को नाटक रूप में लिखकर उसका कक्षा में मंचन कीजिए।
2. व्यंग्य कथाएँ पढ़िए और अपनी मनपसंद व्यंग्य कथा कक्षा में सुनाइए।

(केवल पढ़ने के लिए)

5

राजू का सपना

बारह वर्षीय राजू अपने परिवार के साथ कुछ ही दिन पहले दिल्ली शहर के अपने नए मकान में आया था। वह पहले एक छोटे-से शहर में रहता था।

वह शहर पर्वतीय प्रदेश में था। वहाँ निर्मल जल की धारा बहती थी। सड़कों और मकानों के आस-पास चिनार के घने वृक्ष थे। इधर-उधर खिले सुंदर पुष्पों से हर समय सुगंध आती रहती थी। जब कभी बादल नीचे उतर आते तो कोहरा छा जाने से ऐसा प्रतीत होता कि परियों के देश में आ गए हों। ऐसे वातावरण में बारह वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् दिल्ली शहर में आकर रहना राजू को न भाया।

दिल्ली की सड़कों के किनारे लगे हुए गिने-चुने वृक्ष राजू से अपनी करुण-कथा कहते। उद्यानों में इधर-उधर थोड़ी-सी बची हुई घास भी जैसे राजू से दया की **याचना** करती। फूलों की जगह राजू को दिल्ली में कूड़े के ढेर नज़र आते।

इतना सब राजू को सहना पड़ता। परंतु इसके अतिरिक्त उसके पास कोई चारा न था। उसके पिता का ऊनी वस्त्रों का व्यापार था। काम अधिक होने से तथा मुनीम के वृद्ध हो जाने से राजू के पिता को **सपरिवार** दिल्ली आना पड़ा।

शब्दार्थ: याचना–प्रार्थना; **सपरिवार**–परिवार सहित

उन्होंने एक बड़ा मकान, जिसमें छोटा-सा बगीचा भी था, ले लिया। लेकिन घर से बाहर जाते ही सड़कों पर अस्वच्छता, शोर, जगह-जगह भीड़ थी। बाहर हरियाली न होने के कारण राजू उदास हो जाता।

राजू एक सहनशील बालक था। उसने समय और स्थिति के अनुसार रहना सीख लिया। शीघ्र ही उसका दाखिला एक अच्छे विद्यालय में हो गया। वह मन लगाकर पढ़ता। पढ़ाई के अतिरिक्त वह बगीचे में रोज़ थोड़ी देर घूमता। कभी वहाँ किसी पौधे में पानी डालता और कहीं सूखे पत्ते साफ़ कर देता।

एक दिन विद्यालय में अध्यापिका ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया, ''तुम्हें कौन-सी चीज़ प्रिय है?''

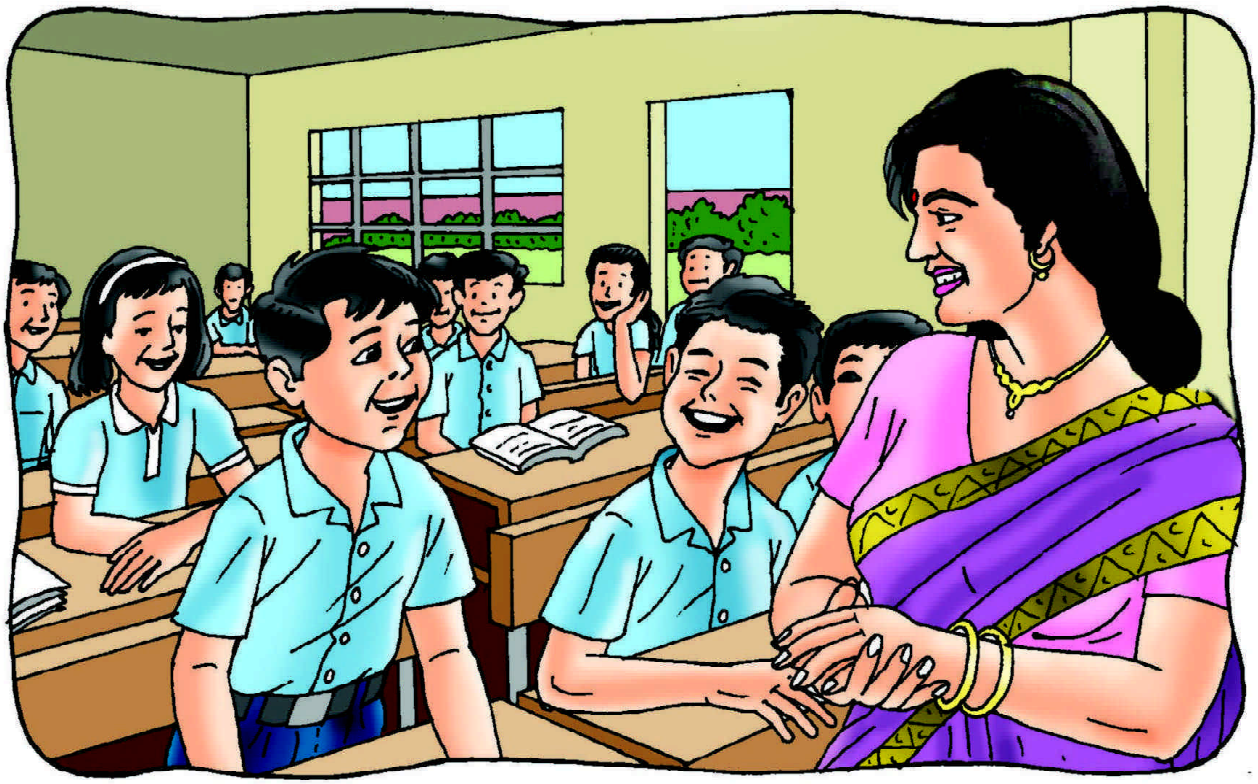

विद्यार्थियों ने यथा-बुद्धि उत्तर देना शुरू किया। कोई कहता खिलौने, तो कोई आइसक्रीम। कोई कहता चॉकलेट तो किसी को प्रिय था—घूमना-फिरना। राजू से पूछने पर उसने कहा, ''मुझे बाग़-बगीचे, पेड़-पौधे और फूल अच्छे लगते हैं। उनमें खेलते हुए पक्षी और गाती हुई कोयल मुझे बहुत प्रिय हैं।'' ऐसा सुनते ही न जाने क्यों कुछ विद्यार्थी हँसने लगे। परंतु राजू का उत्तर सुनकर अध्यापिका बहुत प्रसन्न हुई।

रात को सोने से पहले भी वह अपने सहपाठियों के हँसने के विषय में सोचता रहा। थका होने से शीघ्र ही उसे नींद आ गई। वह सपना देखने लगा। सपने में उसने देखा कि उसके नए घर के पीछे एक पेड़ है। वह उससे कह रहा है—''राजू ! तुम बहुत अच्छे हो। आज तुम्हारे द्वारा दिए गए उत्तर से तुम्हारे भिन्न स्वभाव, निर्मल हृदय और **वनस्पति** जगत के प्रति सद्भाव का पता चलता है। तुमसे पहले इस घर में बहुत बुरे लोग रहते थे। मैं उन्हें छाया देता, शीतल हवा का **वेग** रोककर उन्हें आराम पहुँचाता तथा बसंत ऋतु में फूल और फल देता। बच्चे मुझ पर चढ़कर खेलते। पक्षी

शब्दार्थ: **वनस्पति**—पेड़-पौधे; **वेग**—प्रवाह

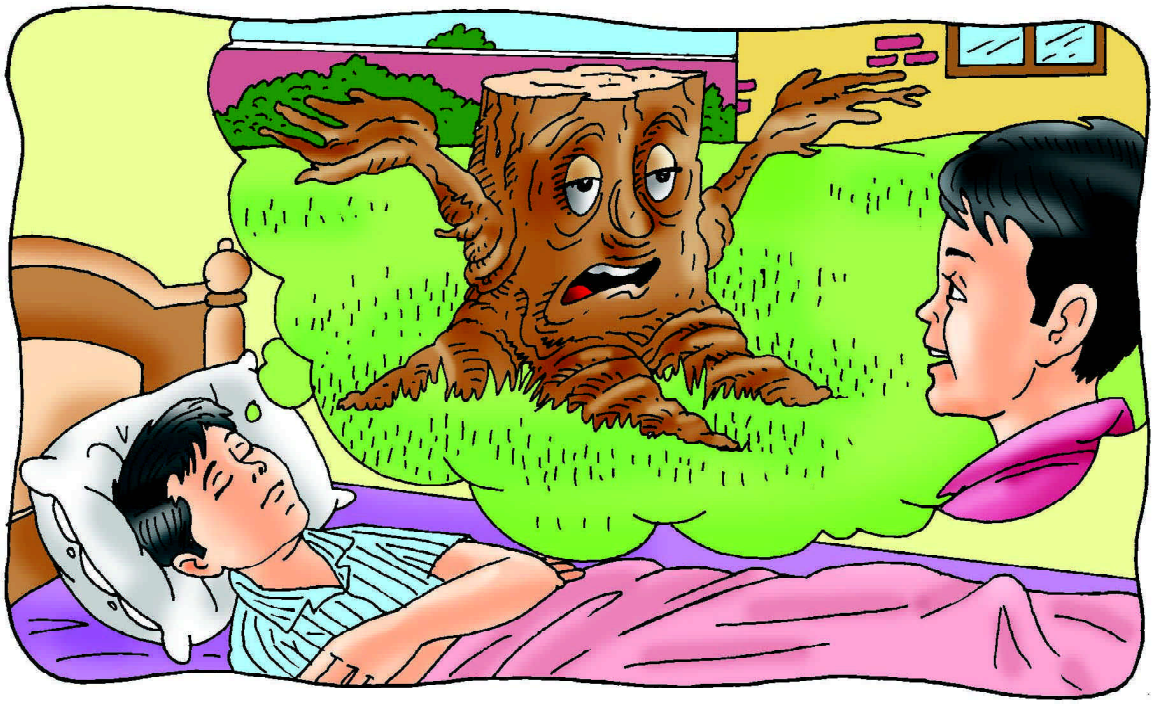

मुझ में घोंसले बनाकर और अपने मधुर गीत गाकर, घर में रहने वाले लोगों को सुख देते। इस सब पर भी वे लोग मुझसे दुर्व्यवहार करते। मेरी शाखाएँ काट लेते और जला देते।

फूलों को पैरों तले **रौंद** देते, जिससे मुझे बहुत दुख पहुँचता। अंत में इस मकान से जाने से पहले वे मेरे पूरे तने को काटकर लकड़हारे को बेच गए। अब केवल तुम ही मेरे प्राण बचा सकते हो। यदि तुम रोज़ मेरे कटे हुए तने को चारों ओर से पानी से सींचोगे तो मैं फिर से हरा-भरा हो जाऊँगा। मेरी यह तुमसे प्रार्थना है।''

प्रातः उठकर राजू अपने घर के पीछे गया। यह क्या? घर के पीछे, थोड़ी दूरी पर ही एक कटे हुए पेड़ का तना था। यह देखते ही राजू के कान में सपने वाले पेड़ की आवाज़ गूँज उठी। उसे पेड़ की प्रार्थना याद आ गई। राजू भागकर पानी का पाइप उठा लाया और नल खोलकर पानी से पेड़ के तने की सिंचाई की। यही नहीं, राजू ने अपने माली काका से कहकर तने के चारों ओर कुछ खाद भी डलवा दी।

कुछ दिन **व्यतीत होने** पर पेड़ के तने में से सचमुच एक हरी-भरी डाल निकल आई। देखते-ही-देखते वह तना एक घना वृक्ष बन गया। बसंत ऋतु आई, बाग़ में बहार आ गई। राजू का जन्मदिन आने वाला था। अब वह तेरह वर्ष का होने वाला था। जन्मदिन वाली सुबह राजू पेड़ में पानी डालने गया। यह क्या? वहाँ सुंदर पीले फूल लटक रहे थे। राजू खुशी से झूम उठा। उसने देखा कि पेड़ पर कई पक्षी भी बैठे थे। उनमें से कुछ चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। मानो, राजू को जन्मदिन की बधाई दे रही हों। राजू को अपने सुंदर कार्य का फल उसके जन्मदिन के उपहार के रूप में मिल गया था।

–श्रीमती कमलेश

शब्दार्थः रौंदना–कुचलना; **व्यतीत होना**–बीतना

6

समय

कितना भी प्रयत्न करो, पर,
समय नहीं रुकता है।
भीषण आँधी-तूफ़ां आगे,
समय नहीं झुकता है।

हमें समय के साथ है चलना,
समय साथ नहीं आता।
एक बार जो पल बीता,
वह कभी हाथ नहीं आता।
टूट डाल से **पात** गया जो,
पुनः कहाँ जुड़ता है। कितना भी...

समय सदा बलवान रहा,
हर कोई समय से हारा।
जिसका समय से कदम मिला,
रहा समय उसी का प्यारा।
समय से पहले जो सोचे,
जीवन में वही उठता है। कितना भी...

इतिहास सिखाता हमें समझना,
समय सिखाता चलना।
जीवन हमको सिखलाता है,
कभी न दिशा बदलना।
समय के दरिया में बहना,
जीवन एक **मुक्ता** है। कितना भी...

शब्दार्थः **भीषण**–भयानक, विकट; **पात**–पत्ता; **मुक्ता**–मोती

साथ समय के वर्षा आती,
समय से गरमी छाए।
आता समय शीत है लाता,
बसंत समय पर आए।
समय इशारा जब करता,
तब ऋतु-चक्र मुड़ता है। कितना भी...

कितने योद्धा हुए धरा पर,
समय ने सबको मारा।
समय निगल गया तूफ़ानों को,
समय बना अंगारा।
समय के आगे **ब्रह्मांड** में,
नहीं तूफ़ां उठता है। कितना भी...

–डॉ. रामगोपाल वर्मा

शब्दार्थः ब्रह्मांड–संपूर्ण लोक, विश्व

अभ्यास

कविता में से

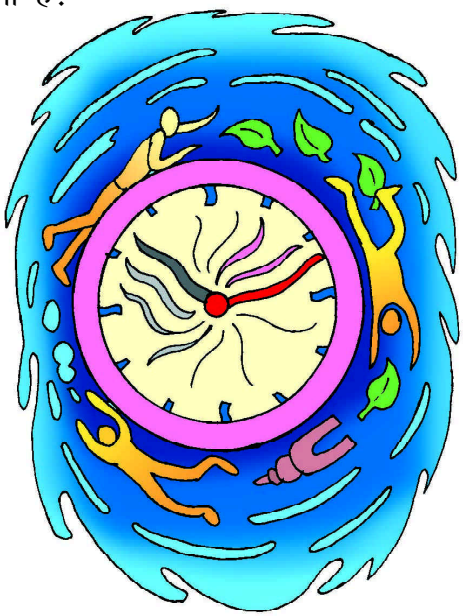

1. कविता में मनुष्यों को समय के साथ चलने के लिए क्यों कहा गया है?
2. प्रकृति समय के अनुसार चलती है, स्पष्ट कीजिए।
3. ''जिसका समय से कदम मिला, रहा समय उसी का प्यारा।''
   इन पंक्तियों के माध्यम से क्या कहा गया है?
4. कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?
5. **कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–**

   इतिहास ..... हमें समझना,
   समय सिखाता .....।
   ..... हमको सिखलाता है,
   कभी न ..... बदलना।
   समय के ..... में बहना,
   जीवन एक ..... है।

6. **नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। जो कथन कविता के भाव से अथवा संदेश से मेल खाते हैं, उनके सामने सही (Ö) का चिह्न और जो मेल नहीं खाते, उनके सामने गलत (×) का चिह्न लगाइए–**

   (क) प्रयत्न करने पर समय रुक सकता है। ☐
   (ख) जो पत्ता एक बार डाल से टूट गया, फिर वह नहीं जुड़ता। ☐
   (ग) भीषण आँधी तूफ़ां के आगे समय झुकता है। ☐
   (घ) प्रकृति भी समय के अनुसार चलती है। ☐
   (ङ) समय सबसे ज़्यादा बलवान है। ☐

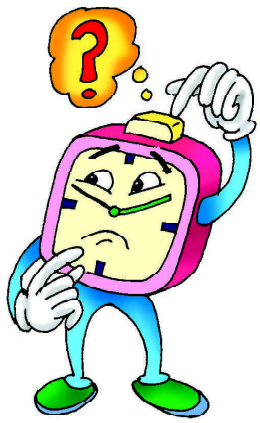

बातचीत के लिए

1. जीवन को मोती क्यों कहा गया है?
2. क्या पूरा ब्रह्मांड समय के अनुसार चल रहा है? कैसे?
3. आप पूरे दिन में क्या-क्या, किस-किस समय करते हैं, उसकी तालिका बनाकर चर्चा कीजिए।

अनुमान और कल्पना

1. यदि आप सुबह समय पर विद्यालय नहीं पहुँच पाएँगे तो क्या होगा?
2. मान लीजिए कि आपने समय रहते परीक्षा की तैयारी नहीं की और परीक्षा का दिन आ गया तो आप क्या करेंगे?

भाषा की बात

1. दिए गए शब्दों के कविता में से समान अर्थ वाले शब्द ढूँढकर लिखिए–

(क) क्षण – ..... (ग) मोती – .....

(ख) हमेशा – ..... (घ) शक्तिशाली – .....

2. 'ना' या 'ता' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए–

(क) चल + ना = ...चलना..... (घ) झुक + ता = ...झुकता.....

(ख) बदल + ना = ... (ङ) रुक + ता = ...

(ग) समझ + ना = ... (च) जुड़ + ता = ...

3. नीचे दी गई ऋतुओं की एक-एक विशेषता बताइए–

ऋतु	विशेषता
(क) वर्षा	.....
(ख) ग्रीष्म (गरमी)	.....
(ग) शीत (सरदी)	.....
(घ) बसंत	.....

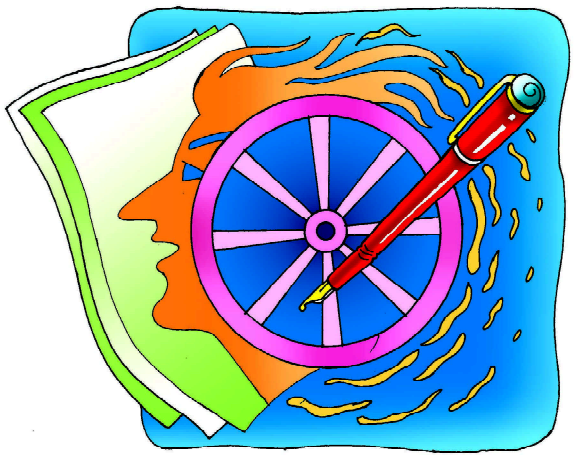

जीवन मूल्य

- समय का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है।

1. क्या समय हमें अनुशासन में रहना सिखाता है? कैसे?
2. समय पर काम करने से क्या लाभ होते हैं?

कुछ करने के लिए

1. **नीचे दी गई कविता को पूरा कीजिए–**

समय से सोना समय से उठना,

.....

समय से जो करता काम,

.....

गया समय जो हाथ न आए,

.....

समय न कभी इंतज़ार करता,

.....

2. समय के महत्त्व पर आधारित कविताओं, दोहों का संकलन कीजिए और कक्षा में सुनाइए।